

શ્રી ગુંસાઈજુ ના અધરામૃત
ના પ્રતાપે રચાપેલા
શ્રીસવોત્તમજુ ના 108 પદ



सर्वोत्तम- १०८ पद

गोविन्ददास (श्रीगुसांईजी के भ्यवास) कृत

प्राकृत धर्म रहित अप्राकृत निष्प्रिल धर्म सहित साकार ।
निगम निरूपित सुङ्ग पुरुषोत्तम वदनानल श्रीवल्लभ अवतार ॥१॥

स्तुति करौ सदानंद पद सेवौ सुजस स्त्रवन करौ गुनगान ।
वित मैं वितन करौ ऐनिदिन सुबोधिनी अरु ववनामृत पान ॥२॥

करुना करि कलि प्रकट अए बिन हेतु न दैरी जन उद्घार ।
श्रीविठ्ठल निजपद नौका दै 'गोविंद' उतारौ अवसागर पार ॥३॥

विदुष जन दृष्टि कलिकाल कहा तिमिर नै निमि नवनीत कौ हार्द न लह्यौ ।
ब्रह्म साकार कौ भ्रेद जाने बिना आसुरावेस तै विठ्ठ्ठ छी कह्यो ॥४॥

भूमि के जीव मतिहीन वैकुंठ की बात कौं कहौ कहा मंद कैसे ज जाने ।
ब्रह्म साकार कौ रूप जाने बिना मूढ अति अज्ञान क्यों जु मानै ॥५॥

तस्य संप्रति तातै नहिं होत है उग्र माहात्म्य कौं ज पार पावै ।
श्रीविठ्ठल पदकमल रजधन 'गोविंद' जन हरिवदन वहिन गुन गावै ॥६॥

जब श्रीहरि भई यह इच्छा निज महिमा प्रगटवे काज ।
ब्रजपति वदन-अनल आनंदमय तब प्रगट किए वाक्पति द्विजराज ॥७॥

सो स्वरूप प्रगट्यौ भूतल मैं विद्यानिधि विदुषन सिरताज ।
दरस परस आनंद उपज्यौ उर तीनों भुवन रहे सब गाज ॥८॥

दैरी जन सब करत बधाई विता गई सबनि की आज ।
कहत 'गोविंद' यह गान करौ नित बाल वृद्ध सब जोरि समाज ॥९॥

अति तदुकत दुर्बोध जानि जिय कियौं सुबोध श्रीविठ्ठलेश ।
शतअष्टोत्तर नाम दान दै महा अध हर्यो मिट्यो वलेस ॥१०॥

पढ़ौ सुनौ वित मैं वितन करौ कछु मति धरौ विता कौ लेस ।
एक ऐसना कहौं कहा बरनों थकी सारदा सहस मुख सेस ॥११॥

यह अवतार काहू बरन्यो स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान विसेस ।
दैरीजन उद्घरन कौं प्रगटे भूतल 'गोविंद' प्रभु श्रीवजेस ॥१२॥

ऋषि मैं ऋषिराज श्रीमद्गिनकुमार ।
आनंदमय नखसिख पर लैहौं वारौं कोटिक मार ॥१३॥

नाम्नां छन्दो जगत्यसौ सो मन वच क्रम निरधार ।
श्रीकृष्णास्य देवता श्रीमद्भूत द्विज अवतार ॥१४॥

करुणा बीज प्रभु प्रमेयबल कियो जगत उद्घार ।
षट्गुन पूरन श्रीवल्लभ के अग्नित गुन 'गोविंद' जु अपार ॥१५॥

भवितयोग प्रतिबंध निवारन कारन सर्वोत्तम विनियोग ।
सिद्धि: श्रीकृष्णाधरामृतास्वादफल निःसंशय यह आस्य उपयोग ॥१६॥

जो रस सिव चतुरानन दुर्लभ धनपति जलपति गनपति भावै ।
सुरपति दिनपति अरु राकापति दरसन करि समाधि नित ध्यावै ॥१७॥

यह नित नियम करौ जिय अपने पढ़ौ सुनौ वित वितन कीजै ।
श्रीविठ्ठल करुना करिकै 'गोविंद' कौं सर्वोत्तम दीजै ॥१८॥

यह छः पद स्तोत्र के पहिले छः उलोकों के हैं । अब एक नाम का एक एक पद है ।

(१) गम : ब्रह्म

(२) गम : विभास

(३) गम : श्रीरामश्री

(४) गम : विलाबल

(५) गम : गायाकरी

(६) गम : टोडी

(१) राग : खिलाफल

आनंद रूप श्रीवल्लभ को अपने जिय माओ
और सबै तुम छांडि इनिही को माओ ।
तीन लोक में कोउ नहीं पटतर को आतै ॥१॥
देव कोटि तैतीस में कोउ पार न पातै ।
आनंद नाम रसना रटौ अर्थहि विद्यारि ॥२॥
पैये 'गोविंद' जन जप किए पुष्टि पदारथ वारि ।
(२) राग : विभास
तन मन धन मम यह मैरौ सर्वस परमानंद ।
श्रीवल्लभ अजहु निसिदिन नान करहु सुछंद ॥१॥
निरखि निरखि मेरे नैजनिसियाऊ श्रीहरिवदन मुख्यवंद ।
आनंद मगन सदा रहूँ रवि दरसन मानहु अरविंद ॥२॥
सुभग मूरति जिनि नैनानि निरखे सो जन परे प्रेम फंद ।
यह महानिधि मेरे हृदै कमल तै छिन मति टारौ कहत 'गोविंद' ॥३॥

(३) राग : धनाश्री

मेरौ सर्वस श्रीकृष्णास्य ।
मायावाद निवारन कारन कीर्नौ है अणुआव्य ॥१॥
सुर नर मुनि देव कोटि तैतीसो करत है सदा उपास्य ।
यह तजि और तत्व काहै रे मानें होहि लोक उपहास ॥२॥
श्रीवल्लभ चरनकमल सेवक जन सबते रहत उदास ।
श्रीविठ्ठल पदरज 'गोविंद' करत बहिमुख कों हास ॥३॥

(४) राग : भैरव

कृपानिधि कृपा कीर्नी दरस दिखायो ।
भटकि भटकि सब तीन लोक में अब यह निधि पायो ॥१॥
स्त्रुति स्त्रुति शास्त्र पुरान अगोचर सुर नर मुनि कोउ पार न पायो ।
श्रीहरिवदन बहिन करना करि निज स्वरूप महिमा बताओ ॥२॥
षट् साधन अधिकार नष्ट भए कलि मैं कृष्ण भजन सु सिखायो ।
यह विवेक जानि जिय अपने जन 'गोविंद' विमल जस गायो ॥३॥

(५) राग : बसन्त

दैवोद्धारप्रयत्नात्मा कों न आधी निमिष बिसरऊ ।
वित मैं वितन करैं अहनिंसि उस आनंद उपजाऊ ॥१॥
और ढुन्ड जिय जानि छांडि दै श्रीवल्लभ गुन गाऊ ।
मैरौ सर्वस सुभग मूरति बिनु कहूँ न सीस नवाऊ ॥२॥
वचनामृत सुबोधिनी सुनिकैं श्रीवल्लभ उर लाऊ ।
गोद पसारि मांगत 'गोविंद' जन चरनकमल रज पाऊ ॥३॥

(६) राग : ईमन

स्मृतिमात्रातिनाशन सुमिरे बढत आनंद ।
आनि उपाय उपाधि जानि जिय तजि वित भजि श्रीवल्लभ मुख्यवंद ॥१॥
रसना रटत नैकु नहिं छांडत फूलि रहे निज जन अरविंद ।
हंसत परस्पर करत कुलाहल सब ही परे प्रेम के फंद ॥२॥
भूतल फिरत महारस भीने निज जन अति मदमत गयंद ।
श्रीविठ्ठल पदरज प्रताप बल निर्भर फिरत सदा 'गोविंद' ॥३॥

(५) राम : श्री

श्रीआगत गूढ़ार्थप्रकाशन परायण को, महिमा मैं जाने तै मेरी मन अटवयो ।
जबलौ श्रीवल्लभ की महिमा मैं जानी नहीं, तो लौ दू यात ठौर ठौर अटवयो ॥१॥
चर्षणी की संगति तैमेंरी मन भ्रष्ट भयी, कलु विवेक समझे बिनु रह्यो बीच लटवयो ।
श्रीवल्लभ संगति तै मेरे हृदै उपज्यो ज्ञान, साधुसंग कीनों मैं और गवै पटवयो ॥२॥
अब जिय मौं जानत हौ आयुष तै वृथा जात, काम क्रोध लोअ मोह मत्सर तै सटवयो ।
सबहु कम्हु घेत मूढ़ सुभग सुर्यति हृदै धरि, और सब परिणयी तुम 'गोविंद' जन गंग गटवयो ॥३॥

(६) राम : आसावरी

साकार ब्रह्मवादैक स्थापक प्रगट भये ।
सुनि ल्ल्रवननि निज दैवी सृष्टि सबके दुख दूर नये ॥१॥
दृरिवदनानल प्रगटे बिन जगत सब जात वहययो ।
सुर नर मुनि ल्ल्रुति सास्त्र पुराननि हारद न लह्यो ॥२॥
कलि मैं करना अरि कृष्णपदसेवा सिखये ।
जन 'गोविंद' सोइ बड़भानी जिनि यह तिति निभये ॥३॥

(७) राम : रामश्री

करहु वेदपारण सुखद चरनसेवा ।
आनि आलाप तजि वटिनपदकमल-अजि श्रीवल्लभ सकल देवाधिदेवा ॥१॥
कलिकलमधापहं सकलदुःखदारणं अवसिधुतारणं परमममलं ।
साधन सब तजौ निसिदिन वल्लभ भजौ अति सुखद सुवटिनपदयुग्मलकमलं ॥२॥
परमसुखदायिनी अवितरनपायिनी देत हैं हरि वदनवटिनदाता ।
श्रीवल्लभवर बिना तीनहु लोक मैं 'गोविंद' नहिं सुने और कोउ अयत्राता ॥३॥

(८) राम : टोडी

मायावादनिराकर्ता प्रकटे श्रीवल्लभद्विजराज ।
श्रीहरि प्रगट किए मुख मूरति पुष्टि प्रगटबे काज ॥१॥
महिमा ल्ल्रवन सुनत कुमुदिनी से फूले अवतसमाज ।
अब उद्धार विषयिनी वित्र नई सबनि की भाज ॥२॥
जयजयकार भयो त्रिभुवन मैं रहे भुवन सब गाज ।
सुमिरत तै आनंद होत है 'गोविंद' जन सिरताज ॥३॥

(९) राम : टोडी

सर्ववादिनिरासकृत् कौं को जन पावत पार ।
स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान अगोवर पुरुषोत्तम निरधार ॥१॥
धरनीतल मैं प्रकट भए बिनु बसुधा बूढ़त भार ।
प्राकृतरूप असुर मोहन कौं अप्राकृत प्रान अधार ॥२॥
बिनु साधन उद्धरत निजजन कौं प्रगट कृष्ण अवतार ।
जो सर्वसु श्रीवजजन कौं दे सो 'गोविंद' कौं रखवार ॥३॥

(१०) राम : टोडी

भवितमार्गाव्यजमार्त्तण अवनि उदय जानि जिय दैवीजन कमल फूले।
श्रीवल्लभ प्राकृत रूप देखि आसुर सृष्टि मोहित अति विदुषवृद भूले ॥१॥
स्त्रुतिपथ भयो प्रकास मायावाद तिमिर गयो सुभग मूरति निरस्ति उपज्यो आनंद।
मन वव क्रम करि कहत 'गोविंद' जप किए सहजसो पेहै सुखद आनंद ॥२॥
कलिकलुषहरन हरि आपु अपनो वदनवटिन है निज दास दरस दीनहो ।
द्विजवर अवतार धरि प्रेम सौ भवित करि सिखाए निज दास सब गुनप्रबीनो ॥३॥

(१३) यग : टोटी

स्त्रीशुद्राव्युद्धतिक्षम कौं जसा व्यापि रहयो त्रिलोक माँहि ।
विन साधन व्रजपति कौं सौपत श्रीवल्लभवर दृढ करि गाहि बांहि ॥१॥
उर आनंद न समात पुष्टिजन करत अहनिंसि वही गुनगान ।
पटतर तनक न पावत कोउ सुर नर जन करत बल्यान ॥२॥
भूत अविष्य स्त्रवन नहि सुनियत करि करना अब दरस दिखायो ।
यह निधि साधन तें नहि पैयत श्रीविठ्ठल पद रज 'गोविंद' ॥३॥

(१४) यग : आसावरी

अंगीकृत्यैव गोपीश वल्लभीकृत मानव नाम ।
करि करना कलिकाल में निजजन के पूरे काम ॥१॥
अवनितल में आनंद भयो घर घर आठो जाम ।
सुभग मूरत श्रीवल्लभ है देखो नखसिंख अंभिराम ॥२॥
अब विंता सब मिट गई प्रगट भयो सुख कौं धाम ।
फूल्यो फिरत 'गोविंद' सदा पायो निजपद गोकुल गाम ॥३॥

(१५) यग : सारंग

अंगीकृतौ समर्यादो पुरुषोत्तम प्रगट भए स्त्रवन सुनत निजजन उपज्यो आनंद ।
करि करना हरिवदनानल श्रीवल्लभदास दियो खिलुरयो मन वय क्रम करि प्रगट गोकुलवंद ॥१॥
नखसिंख सब अति अनुपम प्रगट भए धर्मरूप रूप वसुधा पान करत सबै विदुष वृंद ।
सुर नर मुनि करि समाधि एकवित्त है द्यान धरत पावत नहि पार कसु मायावादिमत्तग्रंथं ॥२॥
देखियत प्राकृत रूप निषुचय है अप्राकृत मानुषाकृति देखि परे फंद ।
पुष्टिसृष्टि उद्धरन कौं छिजवर अवतार धर्यो मायामत छंडन कौं प्रगट 'गोविंद' ॥३॥
अबके महाकारणिक कहियत तजि निजधाम अवनितल प्रगट भए
सबके मनआए ॥१॥

(१६) यग : देवगंधार

अपनी प्रतिज्ञा सत्य करि तुम निजजन नेह निवाहे ।
सब परिकर लै सरन भयो सो तब पद सरोज रज पाए ॥२॥
जिन नहि जाने श्रीहरि मुख्य मूरति तिन वृथा जनम गंवाए ।
सर्वसु श्रीवल्लभ निजजन कौं सो 'गोविंद' जन जस गाए ॥३॥

विश्रु तुम अबके मोहि उद्धारौ ।
अतिहि समर्थ स्त्रवन सुनियत है श्रीवल्लभ नाम तिहारौ ॥१॥
उथरे अधम अनेक साधन बिनु अपने जिय विचारौ ।
कोटिक जनम कौं महा अपराधी मेरे अवगुन सबै विसारौ ॥२॥
निःसाधन हौं रंक जानि जिय दुर्स्तर अवसागर तारौ ।
विनति सुनहु रंक 'गोविंद' कौं अपनी प्रतिज्ञा पारौ ॥३॥

(१७) यग : रामश्री

अदेयदानदक्ष स्त्रवन सुनि हौं सरन आयो ।
सिव विरंचि सुर नर मुनि कोउ पार न पायो ॥१॥
है अप्राकृत रूप अपुनौ प्राकृत रूप दिखायो ।
दैवी जीव बिना असुर सबकौं मोह उपजायो ॥२॥
तिहारी महिमा स्त्रवन भयी मेरो मन आयो ।
श्रीवल्लभ पदरज धन 'गोविंद' प्रेम सहित गुन गायो ॥३॥

(१८) यग : नट

(१९) यग : विभास

महोदारचरित्रिवान् की पदरज हौं पाऊँ ।
असदालाप असत् संगति और सबै बिसराऊँ ॥१॥
सूभग मूरति श्रीवल्लभ बिन कहुं नहिं सीस नवाऊँ ।
हरिसेवा हरिकथा छांडिके अनत कहुं नहिं जाऊँ ॥२॥
निसिदिन गुनगान करौं नैननि हैं सिराऊँ ।
'गोविंद' जन इतनौ चाहत तिहारौ दास कहाऊँ ॥३॥
प्राकृतानुकृतिव्याज मोहितासुरमानुष प्रभु सुर नर मुनि ध्यान धरत पार कछु न पावै ।
दिवि भूति पाताल में कोउ पटतर नहीं है अप्राकृत रूप दिखायो आसुर मोह उपजावै ॥१॥
कोटि जनम भटकि भटकि अब मन में हार मानि साधन करि वृथा क्योहि जनम सब गमाव ।
और सब उपाधि छांडि असत्संग को निवारि संसय सब मन को काद्यो अपने जिय आवै ॥२॥
वचनामृत स्त्रवन सुनौं हरिसेवा हित सौं करौं दुस्तर भवसिधु तरौं वल्लभ उर लावै ।
कहुत 'गोविंद' कलिजुग में और कछु उपाय नार्थी मन वचन क्रम करि निसिदिन श्रीवल्लभ
गुन गावै ॥३॥

(२०) यग : सारंग

दैश्वानर नाम सुनत असुर जीव जरि मरै ।
मायावादि मत गयंद सुनत उपज्यो त्रास, अति उजास देखि अवकास आइ सबै पांयनि परै ॥१॥
जो अपने जिय जानि सरनागत होइ रहैं, बिन साधन करना करि कलिजुग में उद्धरै ।
मन वचन क्रम करिके कहुत अन्य उपाय सबै तजौ , 'गोविंद' प्रभुचरन भजौ सो भवसागर तरै ॥२॥

(२१) यग : भैरव

वल्लभार्घ्य वल्लभ मोक्षों अति ।
रसना रटन करौं हौ ऐनिदिन लगन लागि रहै सुनहुं प्रानपति ॥१॥
तिहारै दरस बिन दुख पावत हौं करहु कृपा रंक पर द्विजपति ।
महालक्ष्मीपति सुनहु विनती सदा रहौं ऐसी मेरी मति ॥२॥
दुर्लभांधि सदा सबहु सुनहु सुबोधिनी वचनामृत नित ।
और सबै तजि सरन भयौ हो तुम बिन 'गोविंद' की न और गति ॥३॥

(२२) यग : देवगंधार

सद्गुप श्रीवल्लभ नाम तिहारै ।
करि करना करनानिधान प्रभु अपनी प्रतीज्ञा आपु प्रतिपारै ॥१॥
तिहारे चरनकमल आश्रय बिन भय उपजत हैं भारौ ।
सेवा कथा मोहि लागत विष सम सब संसारै ॥२॥
चित में वितन करत अहनिसि कटत कोटि जंजारै ।
श्रीवल्लभ वल्लभ करि 'गोविंद' कन वचन क्रम निरधारै ॥३॥

(२३) यग : ईमन

हितकृतसतां विनती सुनहु हमारी ।
कालब्याल की सत्वर गति देखि भय उपजत है भारी ॥१॥
बिन साधन उद्धरे अनेक जन मन वचन क्रम निरधारी ।
तजि निज धाम अवनितल प्रगटे अपनी प्रतीज्ञा पारी ॥२॥
तिहारै नाम उच्चार किये तैं कटत कोटि जंजारी ।
'गोविंद' जन मांगत हैं अंधिजर नहिं चाहत संसारी ॥३॥

(२५) यम : ब्रैह्म

जनशिक्षाकृते कृष्णभवितकृत् गुन गाडये ।
साधन तै अति दुर्लभ सो सहज मै पाडये ॥१॥

या समान और कहु अबलौ छम गुन्यो नाहिं श्रीवल्लभ विना कोउ अभ्य दान दीनो ।
ताते सब साधन तजि सरनागत ढोड रह्यो द्विवदनाजत श्रीवल्लभ सबै गुन प्रदीनो ॥२॥

यासरसिक लीलामृत उठायि निसिवासर रहि प्रिय श्रीवल्लभवर रहत है रस भीनो ।
कहत 'गोविंद' और सब साधन तजि वरन अज्यो सो तौ सज्जान जाने एही लृप्ति लीनो ॥३॥

निखिलेष्टद नामहि सुनत सुख उपजत मन सुभग मूरति निरस्ति मेरे नैन सिराऊँ ।
श्रीवल्लभ महा उदार सरनागत रक्षपाल महिमा अपार जानि सदा सीस नाऊँ ॥४॥

दुर्लभ दरस दियो मोहि विनती कहा कर्ही तोहि परी रहीं तिहारी पौरि निसिदिन गुन गाऊँ ।
और सबै छांडि देहु सर्व जिय जानि मेरे जिय मै लाऊँ ॥५॥

तिहारे गुन सुनौं सुनाऊं असत् संग विरमाऊं असदालाप अन्याश्रय और सबै विसराऊँ ।
तिहारी बात सबै सुहात और विष सी लागत और कहा कहूं बेर बेर लजाऊँ ॥६॥

रंक ठीन जानिकै प्रभु कलिजुग मैं कृपा कीनि अब इतनों चाहत 'गोविंद' तिहारै दास कहाऊँ ।
तीन भुवन में तुम समान दूजौ कोउ आवत नाहीं निजजन हित जानि देहु वरनरेनु पाऊँ ॥७॥

(२६) यम : विभास

सर्वलक्षणसम्पन्न सुमिरे तैं परम सुख होत ।
बिन साधन किए उद्धारत हैं फुल एकोतर गोत ॥१॥

ऐसी निधि बहुरयो नहिं पावत श्रीवल्लभ वरन सरोज ।
सिव विरंचि सर्वीपति सुर नर मुनि हारे करि करि खोज ॥२॥

दैवीजनहित कारण प्रगटे द्विजवर अवतार ।
कहत 'गोविंद' श्रीवल्लभ सुमिरे बिन होते नाहिं निस्तार ॥३॥

(२७) यम : ब्रैह्म

श्रीकृष्णज्ञानद सो मेरे मन आए ।
करि करना कलिजुग मैं निज धाम तजि कृपानिधि दैवीजन उद्गरन कौं अवनीतल आए ॥१॥

अन्य भजन असदालाप असत्संग असमर्पित काम क्रोध लोभ मोह मत्सर मिटाए ।
अपने जीव जानि दया करि सरनागतवत्सल स्वसिद्धांत वचनामृत सुबोधिनी सुनाए ॥२॥

निज स्वरूप गुप्त रूप जानत है कोऊ नहिं करना करि श्रीवल्लभ आप सब बताए ।
श्रीविघ्नवर सरोज रज धन 'गोविंद' पै अद्भुत अति महिमा सुजस सब गवाए ॥३॥

(२८) यम : विभास

गुण तौ श्रीवल्लभ महाराज ।
और गुण कहावै मिथ्या करिविमुख करन के काज ॥१॥

चौदह विद्या निधि श्रीवल्लभ विदुष वृंद सिरताज ।
मारग पुष्टि कियो प्रगट भूतल रहयौ भुवन सब गाज ॥२॥

श्रीवल्लभ आनु दरस तैं कमल से फूले भवत समाज ।
आसा परिपूरन अयो 'गोविंद' गए सकल दुख आज ॥३॥

(२९) यम : गौ ठी

स्वानंटतुंटिल निजजन स्वानंट देत ।
बिन साधन कलिकाल स्तोर मैं निज सुत गृहिणो समेत ॥१॥

वजपति वहिन आनंदमय आदि दुर्गम संकेत ।
मायावाद निवारि अवनीतल बांधि भवित दृढ सेत ॥२॥

मानुष देह धारि यह समुझे बिन जीवत जैसे प्रेत ।
श्रीविघ्नपदरज 'गोविंद' जन निरस्ति बलैयां लेत ॥३॥

(३१) राग : विहान

सेवक सुखदायी पदमदलायतविलोचन ।

निजजन उद्धरन हेत अवनीतल दरस दियो श्रीभावगत करि प्रकाश संतन दुःखमोचन ॥१॥
मायावाट तिमिर टारि पुष्टिभवित कियो प्रचार हरिसेवा दई दिखाइ अभयदान दीनौ ।
टिवि श्रुति पाताल में कोउ सुर नर मुनि श्रीवल्लभ पटतर कोउ पावत नाहिं बडौ साखौ कीनौ ॥२॥
देस काल द्रव्य कर्ता कर्म मंत्र नष्ट भए ताते कछु होत नाहीं कृष्णाभय कीजै ।
श्रीविठ्ठल पदरज 'गोविंद' जन एहि कहत मन वचन क्रम करिकै सदा ववनामृत पीजै ॥३॥

(३२) राग : आसावरी

कृपादृग्वृष्टिसंहष्ट दासदासी प्रिय सुनौ बात ।
तिहारे दरस के कारन मैं तजे नात अरु तात ॥१॥
और न कछु सुहात है मोहे अष्टप्रहर निसि प्रात ।
ये ही ध्यान हिरदै धरौं मोपै रहयो नाहिन जात ॥२॥
रंक मोहि जिय जानिकै प्रभु देहु दरस कौ दान ।
कीजै 'गोविंद' कौं कृपा करि करै तिहारे गुनगान ॥३॥

(३३) राग : रामश्री

पति तौ तुम ही हो महाराज ।
लोकवेद मरजाद तजी हम श्रीमुख दरसन काज ॥१॥
तीन भूतन में तिहारी पटतर पावत नाहिन कोई ।
तिहारी कृपाकटाक्ष वृष्टि तें सो व्रजपति प्रिय होई ॥२॥
गोट पसारि करत हौं विनती अबके मोहि उद्धारौ ।
एक बेरि करिकै कहौं 'गोविंद' रंक हमारौ ॥३॥

(३४) राग : नटनाययन

रोषदृक्पातसंप्लुष्ट भक्तद्वित मेरे मन बसौ ।
काम तज्यौ क्रोध तज्यौ लोभ तज्यौ मोह तज्यौ मत्सर तजि सरन आयो अब इत उत मति राखौ ॥१॥
हौं सब साधन हीन तुम सब कलाप्रवीन रंक जानि मोहि कछु कृपा कीजै ।
कलिजुग में सुनियत है घट्साधन नष्ट भए ताते कछु होत नहीं अभयदान दीजै ॥२॥
तुम तौ हो महा उदार सरनागत रक्षपाल राखौ करनाकर कलिजुग में बडौ साखौ कीनौ ।
निसिवासर सज्जन संग करि समाज सुजस सुगान करत 'गोविंद' प्रभु जन मन रहत है रसभीनौ ॥३॥

(३५) राग : मलार

हौं कैसैं हरि भक्तसेवित पद पाऊ ।
सर्वस्व लैहौं करिकै तिहारे सरन हौं जाऊ ॥१॥
और उपाय कछु सूझत नाहिन कहा दिन वृथा गवाऊं ।
सेवा करौं सुनौं कथा तिहारी सब प्रपञ्च बिसराऊं ॥२॥
काम क्रोध लोभ मोह मट मत्सर ताके ढिंग नहिं जाऊं ।
वित में चिंतन करौं हौं तुम्हारौ तिहारे ही गुन गाऊं ॥३॥
कालब्याल तैं डर उपजत भारी निर्भय पद उर लाऊं ।
करत 'गोविंद' कर जोरि विनती तव प्रसाद ही पाऊं ॥४॥

(३६) राग : सारंग

सुखसेव्य स्त्रवन उपज्यो मन आनंद ।
प्रगट भयौ धर्मयूप नखसिख आनंद रूप अवनि भूप सरन गए निरखि श्रीमुखचंद ॥१॥
द्विजराज उदय भयौ मायामत तिमिर गयौ चहुंदिसि उडुगन से लपटि रहे विदुषवृंद ।
पानि उदर आनन पद आनंदमय सकल अंग निरखत सब दैवीजन फूले मुखारविंद ॥२॥
मंद अति मंदभाव्य अति उपद्रव देखि कलि में कल्पायुष जीव सब उपजे मतिमंद ।
करना करि बिनु साधन उद्धरन कौं अपने जिय जानि श्रीवल्लभ प्रगटे 'गोविंद' ॥३॥

(३५) यम : बसंत

दुराराध्य स्त्रयज नाम सुनिकै असुरज उपज्यो त्रास ।
 सूर श्रीवल्लभ प्रगटके कीनौ मायावाद विनास ॥१॥
 श्रीवल्लभ आनु उदयो अवनितल स्त्रुतिपथ भयो प्रकाश ।
 विन साधन अनेक उद्धारे दैवीजन पूरी आस ॥२॥
 जयजयकार भयो भूतल में जस प्रसर्यो आकाश ।
 श्रीविहल पदरज जन प्रमुदित गुन गावत 'गोविंददास' ॥३॥
 दुर्लभांधि सरोरह पदयुग लालच लागि रही ।
 उर अंतर की विरह वेदना जात न काढु कही ॥४॥
 प्रीति की रीति अनित्य जानत जे तिनसों न जात कही ।
 स्थानपान सुख बिसरि भयो विरहानल देह ढही ॥५॥
 अति दुर्लभ आयु की घटिका जात है सब वही ।
 यह जिय जानि समर्प्यो सर्वसु तब 'गोविंद' निवही ॥६॥

(३६) यम : बसंत

उग्रप्रताप अवनितल प्रगट भए स्त्रवननि सुनि दैवीजन घर घर सब करत हैं बधाई ।
 हरिविदजानल श्रीवल्लभ करना करि कलिजुग में द्विजवपु धरि बहुरयो दई दिल्लाई ॥१॥
 अग्नित महिमा कहांलौ एक रसना करै बखान बडभागी दैवी सृष्टि रंक महानिधि पाई ।
 चौसठ कला प्रवीन विद्यानिधि वल्लभवर प्राकृत वपु देखि मोहे कछुक पार न पाई ॥२॥
 अबलौं ऐसौं स्वरूप देख्यो नहीं स्त्रवन सुन्यो निजजन उद्धरन यहवानिक बनि आई ।
 कहत 'गोविंद' सुमिरौ सदा निसिवासर आठौं जाम आदर सों जीव हौं गुन गाई ॥३॥
 वाक्सीधु पूरिताशेषसेवक बिनती सुनौ ।
 कोटि जनम के मेरे अवगुन कछु मति गिनौ ॥४॥

(४०) यम : जैतश्री

तुमसे महा उदार न कोउ आगे देखे न पाछे सुने अब यह विधि बनी सबै दैवीजन काज ।
 करि करना सब परिकर सहित प्रगटे भूतल में सुर नर मुनि देखि कहत जय जय महाराज ॥१॥
 उग्र प्रताप देखि कहत बहुरयो प्रगट गोकुलेस वपु धरिकैं कौनौ कलिजुग में साझौ ।
 कहत 'गोविंद' सब समर्पि श्रीवल्लभ के सरन जाऊं सुनियत है बिनु साधन पुरत मन इच्छा अभिलाखौ ॥२॥
 श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षम श्रीवल्लभ के नाम पै कोटी नाम वारू ।
 औं र उपाय सबै तजौ श्रीवल्लभ पदकमल भजौं सुभग मूरति मम हृदय में आनि निमिष न बिसारू ॥३॥

(५) यम : विभास

जागत सोबत रेनदिन रसना तै छांडू नाहिं लगन लागि रही मन वच क्रम निरथारौ ।
 पुनि प्रकटे श्रीवल्लभाधीश वदनवहिन आनंदमय श्रीवल्लभ दिनमनि कियो जगत उजारौ ॥१॥
 मायावाद तिमिर गयो स्त्रुतिपथ प्रगट भयो मायावादी मत गयंद कौं उपज्यौ सिध भारौ ।
 कहत 'गोविंद' अन्य सबै उपाय उपाधि जानि तज्यौ हानि होत जातै कह्यौ सुनौ हमारौ ॥२॥

यम : जैतश्री

तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रह प्रभु रास रसिक लीलामृत रहत सदा भीनौ ।
 निज प्रमेयबल करिकै विन साधन कलिजुग में उद्धरे अनेक जीव भूमि सों जस लीनो ॥१॥

मारग पुष्टि स्त्रुति स्मृति पुरान साख्र अति अगोवर मायावाद खंडन करि सो तौ प्रगट कीनौ ।
 हरि सेवा विधि विवेक करनाकर दैवी जीवन कौं सिखाइ विबुध जनन में बडौ साख्रौ कीनौ ॥२॥
 श्रीवल्लभ स्वरूप महिमा कोऊ जानत नहीं सदानंद वदनवहिन सब कला प्रवीनौ ।
 आनंदनिधि अग्नित जस लीलामृत सागर में निसिवासर क्रीडत तहा 'गोविंद' जन भीनौ ॥३॥

(४३) राग : जैतश्री

सानिद्यमात्रदत्त श्रीकृष्ण प्रेम सो स्वरूप श्रीवल्लभ कहाये ।
 नखसिख सुन्दर देखि चकित अए लोक ही सब छांडि दै रहत है मिर नाये ॥१॥
 जोग जम्य तीरथ द्रवत दान इनि समान आवत नहीं इनि जानि जिय सबतै विरमाये ।
 कहत 'गोविंद' सबै तजौ श्रीवल्लभ दरन अजौ सुर नर मुनि ध्यान धरत कछु पार नाये ॥२॥
 अमत अए कोटि जनम फल पायौ नाहीं न कछु यह बातन कैसे लोग महापद पाये ।
 सत्संगति करौ मित्र प्रभु प्रसन्नता निमित्त दैवीजन सरन अए सो सबै फल पाये ॥३॥

(४४) राग : घन्याश्री

विमुक्तद निर्भयपद सुखदाई ।
 जो पदरज दुर्लभ सुर नर मुनि सो सुलभ करि पाई ॥१॥

साधन तै पैयत नहिं कबहूँ मन वचन निर्धारि ।
 बिन श्रीवल्लभपद नौका वयों पावै भवसागर पार ॥२॥

नामोच्चारणमात्र तै निष्ठय कटत कोटि जंजार ।
 श्रीविघ्न पदरज 'गोविंद' कौ श्रीवल्लभ प्रान अधार ॥३॥

(४५) राग : पूरखी

रासलीलैकतात्पर्य हारद है अति दुर्लभ ।
 अतिक्रम जनम करम प्रवीन तातै होत नहीं बिना कृपा श्रीवल्लभ ॥१॥

यद्यपि रूप गुन सील सुधरता इनि बातनि सौं जनम सिराइये ।
 समुज्जि विवेक सबै सर्वस लै सरन अए सब पाइये ॥२॥

यह सुख अति दुर्लभ सुर नर मुनि सब पविहारे ।
 'गोविंद' सो सुख लूटि लियौ मन वचन क्रम निरथारे ॥३॥

(४६) राग : भैरव

कृपयैकतकथाप्रद प्रभु बडी कृपा तुम कीनी ।
 सन्मनुष्याकृति द्विजवर वपु धरि अधि धरनीतल दैवीजन उद्धरन कों हरिसेवा दीनी ॥१॥

विद्या तप ज्ञान हीन सब साधन रहित दीन अपने जिय जानिकै करना करि दरस दीजै ।
 तुम हौं सब कलाप्रवीन महोदार चित्रिवान अदेय दानदक्ष सो तौ नाम सत्य कीजै ॥२॥

और कछु करि सकत नाहीं विनती सुनौ श्रीवल्लभ तव पदरज अति दुर्लभ सो प्रसाद पाऊं ।
 रंग 'गोविंददास' तिहारौ निर्भय निःसंक ठैकै तिहारे गुन गाऊं ॥३॥

(४७) राग : विहार

विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशक प्रभु ।
 तिहारे वरनरज पावत स्रवन सुनि तिहारे सरन आयो मोहि राखि लेहु विभु ॥१॥

तुम तो मारग पुष्टि प्रगट कियौ भुवि भवित प्रचार कारन कीनों है कृपा करि ।
 ब्रह्मसम्बन्ध करवाय कीने दोष पंच परिहार सदानंद सेवा के निमित्त सत्य नाम कीनों श्रीहरि ॥२॥

यह सत्य ध्यान धर्यौ औ र संग परिहर्यौ संसारसागर तर्हौ तिहारे गुन गाऊ ।
 अवगुन सबै बिसारौ अबकै मोहि उद्धारौ जन 'गोविंद' कहत निर्भय तब वद पाऊं ॥३॥

(४८) राग : वसंत

भवत्याचारोपदेष्टा चरननि मैं मन लागि रहयो ।
 कहा कर्हौ कित जाऊं कृपानिधि जात न मोपै कहयो ॥१॥

आधी निमिष कल्प सम वीतत बिरहानल देह दहयो ।
 तिहारे दरस बिना मोपै नाहिन जात रहयो ॥२॥

तिहारे जन संगति कीने बिनु मैं कछु नाहीं लहयो ।
 बांह गहे बिनु भवसागर मैं 'गोविंद' जात बहयो ॥३॥

(४९) राग : वसंत

कर्ममार्गप्रवर्तक सुनिकै मो मन भयौ आनंद ।
वलहु वेगि देखनको जैसे श्रीवल्लभ मुख्यंच ॥१॥
जन्यपुरुष पुरुषोत्तम प्रगटे सुनि मोहे जनवृंद ।
कोटि काम वारौ यह छबि पर श्रीवल्लभ आनंदकंद ॥२॥
सिव विरंवि सुर नर मुनि निसदिन गावत गीत सुछंद ।
जीव उद्धरन प्रगटे पूरन परमानंद ॥३॥
यागादौ अवितमागेकसाधनत्वोपदेशक प्रभु ।
तिहारी कृपा बिन मर्यादा पुष्टि कौ भेद न जानत कोउ विनती सुनौ हो प्रभु ॥१॥
प्रतारक सात्र स्त्रवन सुनि भ्रष्ट भयौ लहृत न स्त्रुति पथ भय उपजत भारौ ।
तुम बिन दैवीजन कौ त्रिलोक मैं ढूँढ देख्यो नाहिन रखवारौ ॥२॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष सबहि तुमहि हौ तिहारे चरन बिन कछु हम न जान्यो ।
कहत 'गोविंद' जन मन वचन कर्म करि हरिवदनानल श्रीवल्लभ मन मान्यो ॥३॥

(५०) राग : विहार

पूर्णानंद यथारथ नाम ।
आनंद पूरन किए निज जन सब श्रीवल्लभ रूप पर अभियाम ॥१॥
मनसेछित फल देत कृपानिधि ऐहिक आमुष्मिक सब काम ।
जो बडभागी सोई समुझे यह छाडत नाहीं आठौ जाम ॥२॥
जाके हिये लगन लागी गहे श्रीवल्लभ सुख कौ धाम ।
'गोविंद' सदा विमल जस गावत डोलत फिरत श्रीगोकुलधाम ॥३॥

(५१) राग : रामकली

पूर्जकाम श्रीवल्लभ नाम ।
नखसिख सुंदर सुभग मूरति कौ निरखहु आठौ जाम ॥१॥
सुर नर मुनिजन दिवि भूति पाताल मैं न आवै कोउ समान ।
दैवी सृष्टि उद्धारन प्रगटे निर्भय दीने दान ॥२॥
बिनु साधन उद्धरे अनेक जन श्रीवल्लभ महा उदार ।
द्विजवर वहै प्रगटे 'गोविंद' प्रभु निज जन प्रान अधार ॥३॥

(५२) राग : धन्याश्री

कृपा करि वाकृति रूप न धरेते ।
इहि कलिकाल धोर मैं कैसे निज जन निस्तरते ॥१॥
वहिनवदन प्रगटे बिनु सब कोऊ धर्मराज बस परते ।
अति आवर्त सहित भवसागर तें कहौं कैसे उतरते ॥२॥
कोटि काम लावन्य श्रीमुखछबि बिन देखे सब मरते ।
अष्टमहासिद्धि सो सब पाये जो 'गोविंद' प्रभु वरते ॥३॥

(५३) राग : बिलावल

बिबुधेश्वर की बात अटपटी ।
जौं लौ स्त्रवन परी नहिं मेरे तौलौ नाहीं होत चटपटी ॥१॥
ओग सिंगार रीति सेवा की मन वचन क्रम सर्व लटपटी ।
यह विवेक बूझत नहिं कोऊ करत हैं सब अपनी ज़ु अरफती ॥२॥
करिकै सिखवत है सबै निज दासन कौं ज्यों समुझे सब वेंगे झटपटी ।
श्रीविठ्ठल पदरज 'गोविंद' को असुरनि सौं नित होत खटपटी ॥३॥

(४५) राग : श्रेष्ठ

कृष्णनामसहस्रस्य वकता गुन गाइये ।
बिनु साधन कलिजुग में अष्टमहासिद्धि पाइये ॥१॥
अन्य ध्यान सब छाड़ि श्रीवल्लभ उर लाइये ।
हरिवदनानल सु महिमा काहू सों न जनाइये ॥२॥
सुभग मूरति पदसरोज सों लगन लगाइये ।
कहत 'गोविंद' कर जोरि विनती इनहिं सुनाइये ॥३॥

(४६) राग : कल्यान

भवतपरायण भूतल प्रगटे ।
निज जन के कलिकाल घोर में बिनु साधन अब महा अघ कटे ॥१॥
यह छबि अबहि बनि आई भरि भरि नैनन निरखौ ।
सुभग मूरति कौ रूपसुधामृत पान करौ हृदय में रखौ ॥२॥
सुजस सुनौ नाम कीर्तन कौ सुमरहु आठौ जाम ।
'गोविंद' श्रीवल्लभ पर लै वारौ कोटिक काम ॥३॥

(४७) राग : केदारी

भवत्याचारोपदेशअर्थनानावाक्यनिरूपक वचनामृत स्त्रवन सुनत मृत जिवाए निजजन ।
अंधिसरोरह हृदय धरौं और सब परिहरौं वित विनतन करौं सुजस सुनौ स्त्रवन ॥१॥
जैसी तुम कृपा करी तैसी कोउ करै नाहीं, बिन साधन कलि मैं उद्धारे अधमन ।
सुभग मूरति बिन और न सुहात कछु प्रेम उदधि मध्य मगन भयो मन ॥२॥
मनुष्य देह पाइकै श्रीवल्लभ के शरण बिना कोटिक साधन कीने वृथा होत आयुषधन ।
दैवीजन जीवन श्रीवल्लभपदरजधन श्रीविठ्ठल करणा तैं राखहु 'गोविंद' पन ॥३॥

(४८) राग : मामेरी

स्वार्थोजिज्ञाताख्यिलप्राणप्रिय तुम करि कृष्ण सेवाफल दीनौ ।
साधन तैं सुपने जाने सो सब निज प्रमेयबल कीनौ ॥१॥
यह विधि अबहि बनी आई सो सब दैवी सूषिट मनभाई ।
सेवा करिकै आप सिखाइ जो निगम पुरान मैं कहुं न बताई ॥२॥
शिव सनकादि सुरेश चतुरान करि समाधि कछु न पाये ।
सो श्रीविठ्ठल करणा तैं 'गोविंद' आनंद मगन है सदा गुन गाए ॥३॥

(४९) राग : गौडी

हे तादृशवेष्टित हौं जन तिहारौ ।
साधन हीन बहु हीन जानि जिय भय उपजत है भारौ ॥१॥
तप स्वाध्याय दैराम्य जोग ज्ञान बल भवित रहित पर नैक निहारौ ।
तजि निज जन धाम अवनीतल प्रगटे अपनी प्रतिज्ञा आप प्रतिपारौ ॥२॥
ऐसी कबहु भई सुनियत नहिं बिन साधन सब जगत उद्धारौ ।
यह सुनि सरन तिहारे आयो रंक 'गोविंद' कौं कहौ हमारौ ॥३॥

(५०) राग : मलार

स्वदासार्थकृताशेषसाधन तुम पर सर्वस लै वारि डारौ ।
तीन लोक मैं तिहारी बात कौ मरम को जानत मन वचन क्रम निर्धारौ ॥१॥
तिहारी चरनरज है अति पावन परसत तन कौ कटत अध भारौ ।
मंदमति मंदभाव्य कोटि उपद्रव कलि मैं साधन षट नष्ट भए पावत नहिं भव पारौ ॥२॥
जिन महिमामृत पान कियो सब साधन तजि सरनागत वहै तिनकौ पलकनि मग झारौ ।
'गोविंद' प्रभु नव धन वरषा करि अंतर ताप मिटाइ अपनी प्रतिज्ञा पारौ ॥३॥

(६१) राग : गौडी

सर्वशक्तिधृक् श्रीवल्लभ गति परत न जानि ।
 स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान में अति गोप्य कोउ जानत नहीं श्रीहरि स्वास्य प्रगट करि कति में बखानी ॥१॥
 आसुर जीव प्रतारन कों कीनो मायावाद मारग भूतनाथ द्वारा तामें मोहे अज्ञानी ।
 जौ लौ उदयो वल्लभ भानु तौलौ भूतल तिमिर बाढ़ौ अब उजास स्त्रुति प्रकास किए कृतारथ प्रानी ॥२॥
 मायावाद मत गयंद वल्लभ सिंह प्रगट सुनिके उपज्यौ त्रास भयौ उपहास भाने अति अभिमानी ।
 श्रीविठ्ठल प्रतापबल तै गुन गावत 'गोविंद' जन पुष्टि प्रभु की गति सबहिं मन मानी ॥३॥

(६२) राग : ईमन

भृति भवितप्रचारैककृते स्वानवयकृत ।
 दैवीजन उद्धरन कों द्विजवर वपु धृत ॥१॥

ब्रह्मसंबंध कराइ कीनों पंचदोष निवर्तन ।
 स्वसिद्धांत सुनाइ कैं कीनों पुष्टिभवित प्रवर्तन ॥२॥

कलि में बहु कृतारथ कीने दीनी हरिसेवा ।
 'गोविंद' प्रभु श्रीवल्लभ सब देवन कौं देवा ॥३॥

(६३) राग : कल्यान

दैवी जीवन कौं श्रीवल्लभ बिन और न कोउ पिता ।
 तीनि लोक में सुर नर मुनि जन नहिं पावत समता ॥१॥
 पुष्टिसृष्टि उद्धरन कौं कल्पतरु प्रसरी प्रेमलता ।
 यह विवेक समुझे बिनु मन की मिटत नहीं भ्रमता ॥२॥

सिव विरंचि सचीपति मन लाजत देखि सबै प्रभुता ।
 कहत 'गोविंद' श्रीवल्लभ वद बिन कहुं न निर्भयता ॥३॥

(६४) राग : विभास

स्ववंशे स्थापिताशेषमाहात्म्य करिकै जु प्रभु वसुधातल सुख दै पुष्टिमारग प्रगट कीनों ।
 द्विजवर अवतार धर्यौ बिनु साधन जगत उद्धर्यौ हरिसेवा करि सिखाइ अभ्यदान दीनों ॥१॥
 रासरसिक मूरति श्रीवजपति की लीला सुजस निसिवासर ध्यान धरत रहत हृदय भीनों ।
 चौ दह विद्या निधान द्वाविंशत् लक्षत जुत षट्गुन सहित चतुः षष्ठि कला प्रवीनों ॥२॥
 और ध्यान सबै छांडि सरन भयो मन वचन क्रम करि अपनौ करि लै ताकौ मन मिट्यो अभिमानों ।
 श्रीविठ्ठल पदरजधन सर्वस है 'गोविंद' कौं वल्लभवर ते सब लगत जगत हीनों ॥३॥

(६५) राग : श्रैरव

श्रीसमयापह की चरनरेनु पलकनि करि झारौ ।
 मनभाविनी सुभग मूरति नैनति ते निहारौ ॥१॥
 आनंदमय अनलवदन हृदयसरोज लाऊ ।
 असदालाप असत्संग और सबै बिसराऊ ॥२॥
 तिहारे चरनकमल छांडि और कहुं न जाऊ ।
 कहत 'गोविंद' तिहारौ सुजस जनम गाऊ॥३॥

(६६) राग : ईमन

पतिव्रतापति तुम हौ ।
 हौं पतिव्रता दासी तिहारी तुम पतिव्रत निबहौ ॥१॥
 स्वंग मृत्यु पाताल के तुम पति मति कोऊ और कहौ ।
 श्रीवल्लभ तुम हो जु जगतपति सदा मम हिरदै रहौ ॥२॥
 परम महानिधि पाए पुष्टिजन मति कोऊ आनि लहौ ।
 भवसागर बूढत अपनों करि 'गोविंद' बांह गहौ ॥३॥

(६४) राग : नट

पारलौ किकैहिकदानकृत् वित धरौ ।
अन्य आलाप सब वृथा जिय जानिके सुभग मूरति सुजस गुन गान करौ ॥१॥
सुखद सेवा करौ औ र सब परिहरौ स्त्रवन कीर्तन करौ आठौ जाम ।
वित वितन करौ होत है परम सुख सुनत हैं श्रीवल्लभ पूरनकाम ॥२॥
नाम महिमा नहीं प्रकट भूलोक में स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान गूढ़ ।
कहत 'गोविंद' जन सृष्टि दैवी बिना और जानत नहीं असुर मूढ़ ॥३॥

(६५) राग : रामश्री

निगूढ़ हृदय श्रीवल्लभ व्रजेश ।
सुजस स्त्रवन सुनत होत आनंद अति जनम कोटि कौ हरत वलेश ॥१॥
चरनरज धरत सिर कोटि तैतीस सुर पार पावत न ब्रह्मा महेश ।
अन्य अवतार में मुख्य अवतार यह श्रीहरि विशेष ॥२॥
अन्य आलाप तजि ध्यान हिरदै धरौ प्रगट श्रीवल्लभ अवनितल परेश ।
कहत 'गोविंद' जन बहु दरसन दियौ धोषपति विदित द्विजराज वेश ॥३॥

(६६) राग : सारंग

अनन्यभवतेषु ज्ञापिताशय ।
स्त्रुतिहारद कौं श्रीवल्लभ बिनु समुझत नहीं सुरराशय ॥१॥
पतिव्रता अपने पति के आगे स्वहारद सब विनती करै ।
सौ पति श्रीहरिवदनानल बिनु भवसागर कौं परिहरै ॥२॥
सो वडभागी भरतखंड प्रगटे बिन साधन भवसागर तरै ।
यह विवेक समुझ्यो जन 'गोविंद' श्रीवल्लभ हिरदे घरै ॥३॥

(६७) राग : सारंग

उपासनादिमार्गतिमुर्धमोहनिवारक प्रभु प्रगट होड कीने हैं निगम पथ प्रकास ।
सिव विरंचि सर्वीपति देव कोटि तैतीस भयौ आनंद सुरसुंदरी चढि विमान छायो आकास ॥१॥
सुर नर मुनि प्रफुलित मन सुजस विमल करत गात मायावादी विदुषवृंद उपज्यौ मन त्रास ।
श्रीवल्लभ भानु दरस सब दैवीजन कमल फूले देखत अणूभाष्य ॥२॥
चौदह विद्या निधान बट्गुन प्रभु पूरनकाम चतुःषष्ठि कला सहित स्व आस्य ।
श्रीविठ्ठल पदरज धन 'गोविंद' को मन वह क्रम औ र कछु नाहीं श्रीवल्लभ पद उपास्य ॥३॥

(६८) राग : सामेरी

श्रीहरिस्वबदनानल श्रीवल्लभ कौं करि करुना प्रगट किये ।
द्विविध पुष्टिमरजादा भवित कौं भेद प्रगट करिवे कौं आज्ञा किये ॥१॥
सो श्रीवल्लभ प्रभु आज्ञा तै भूति सन्मनुष्याकृति द्विज वपु विभृत् ।
भवितमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत् ॥२॥
मरजादा में मंत्र करि हरि विभूति करिके भजौ ।
पुष्टि मे एक स्नेह कौं कहै 'गोविंद' वहिन बिन सब तजौ ॥३॥

(६९) राग : विभास

पृथक्षुरणमार्गोपदेष्ट सुखद पदकमल अन्य आलाप तजि हिरदे राखौ ।
वित वितन करौ औ र सब परिहरौ सुजस स्त्रवन करौ वदन भाखौ ॥१॥
सकल साधन तजि श्रीवल्लभपद भजौ असत्संग छांडिकै गति दाखौ ।
देव दुर्लभ दरस सौं सुलभ होत है जानी जिय पूरत हैं सबनिके मन अभिलाखौ ।
कहत 'गोविंद' जन तीनहि लोक में तुम बिर्नाह मोहि नहीं और पाखौ ॥३॥

- (७३) यग : श्रेष्ठ
दिवि श्रुति पाताल में कोऊ नाहीं श्रीकृष्णहार्दवित् ।
पुष्टिस्थृष्टि उद्धरन कों करना करि कलिजुग में श्रीहरि निज वदन वहिन प्रगटे हैं निज जन हित ॥१॥
सो स्वरूप श्रीवल्लभ श्रीभागवत गृदार्थ करि प्रकास सदानन्द सेवाविधि सब सिखवत ।
तीरथ ब्रत धर्म कर्म दान देहदमन सबै छांडि भजौ श्रीवल्लभ जिनि भूतल द्विजदेह विश्वत् ॥२॥
ब्रह्म साकार स्थापन करि दैवीजन किये कृतारथ स्त्रुति विरोध टारि सबै बहिन मायावाद भित् ।
ब्रजपति मुनि दरस अयो भूतल आनंद अयो कुंज निकुंज डोलत है ब्रजप्रिय 'गोविंद' सहित ॥३॥
- (७४) यग : श्रेष्ठ
प्रतिक्षणनिकुंजलीलास्थलरससुपूरित कौ स्वरूप हृदय में धारे ।
तिनके भाव्य कहां लौ बरनौ लीलारस अगाध सागर श्रीवल्लभ हृदय तैं न टारै ॥१॥
छिन छिन प्रति योम योम लीलारस उच्छ्वलत होत जो निसिदिन ऐसौ रूप विचारै ।
वृदावन निकुंजलीला सहित ब्रजपति तिनतैं कबहूँ होत न न्यारै ॥२॥
तिनको पावन पदरज परस तै दरसन मात्र तै कटत है अध भारे ।
कहत 'गोविंद' ऐसेन की संगति तिनको मिलै जापै श्रीविष्वल हौंहि कृपारे ॥३॥
- (७५) यग : श्रेष्ठ
तत्कथाक्षिप्तिवित्तस्य पदसरोङ्ग पाऊँ ।
आनि आलाप सब तजौ श्रीवल्लभशरण जाऊँ ॥१॥
सेवा अरु कथा छांडि नहीं क्यहूँ ललचाऊँ ।
विमल सुजस छांडि कबहूँ और न गाऊँ ॥२॥
सुभग मूरति छांडि नहीं और रस लाऊँ ।
'गोविंद' इतनौ मांगत तिटारौ दास कहाऊँ ॥३॥
- (७६) यग : ईमन कल्यान विस्मृतान्यरस के घरनकमल तै सब सुख पैयै ।
अन्य आलाप करौ जिन कोऊ अति सुखदायक श्रीवल्लभ कौ विमल सदा जस गैयै ॥१॥
अति दुर्लभ श्रीवल्लभ दरस कों त्रिविध महादुःख सब तै सहिये ।
साधन कोटि करौ जिन कोऊ काया कों वृथा भटकि दिन खोकत सरणागत वहै रहियै ॥२॥
यह निधि एक उपाय तैं पैयत सर्वस लै समर्पन करै तुम श्रीवल्लभ धैर्य ।
सेवा कथा साधु संगति करि निसिदिन सुभग मूरति वित मैं धरिकै 'गोविंद' नेह निबहियै ॥३॥
- (७७) यग : वसंत
ब्रजप्रिय प्रिय निजधाम बतायौ ।
वतुरानन अपने सुत भृगु कों स्त्रुतिलघा भाव जनायौ ॥१॥
सुर नर मुनि समाधि किये पै पार कछु न पायौ ।
रस रसिक मूरति किशोराकृति गोधन के संग धायौ ॥२॥
वृज ब्रजजन पति पदरज धन निगम निरुद्ध बतायौ ।
सौ सब सर्वस 'गोविंद' जन कौ सो अबहि भयौ मनभायौ ॥३॥
- (७८) यग : ईमन कल्यान तबलौ प्रिय ब्रजस्थिति कौ हारद न कछु लहयौ ।
जौ लौ श्रीवदन वहिन श्रीवल्लभ आपुन नाहिं कहयौ ॥१॥
साधन करि पचहारि मूढमति कारन कछु न भयौ ।
सर्वस कियो समर्पन प्रभुकौ तब यह निबहयौ ॥२॥
श्रीवल्लभ पदरज महिमा बिनु जानै भवसिंधु मैं जात बहयौ ।
श्रीविष्वल पदरज धन 'गोविंद' एहि उपाय कहयौ ॥३॥

(७९) राग : गौड़ी

पुष्टिलीलाकर्ता दुर्लभ दरस तिहारौ ।
साधन तै कछु होत नाहीं मन वचन क्रम तिर्धारौ ॥१॥
जे जन सर्वसु लै सरन भयौ पदनौ का दै भवसागर पार उतारै ।
जो जन विमुख श्रीवल्लभचरनज तै सो तौ सर्वस हारै ॥२॥
अब तो आई बनि जिय मेरे तुम बिन औ र न कोउ रखवारै ।
सत्यप्रतिज्ञ चरनरज 'गोविंद' रंक जानिकै कहौ हमारै ॥३॥

(८०) राग : बिलाबल

रहःप्रिय सदा एकान्त ही भावै ।
लीला सदा द्विविध व्रजपति की अनुभव करत न औ र सुहावै ॥१॥
दैवीजन निजपद नौ का दै बिन साधन भवसागर तारै ।
महा कलिकाल ब्याल दुःसह भय टारि अपनी प्रतिज्ञा पारै ॥२॥
अब निर्भय सो भजि श्रीवल्लभ पदकमल सुपरिमल पीजै ।
कहत 'गोविंद' तजौ सब साधन अब मन वचन क्रम करि कूटि यह रस लीजे ॥३॥

(८१) राग : धनाश्री

भवतेच्छापूरक दरसन दीजै ।
तुम तो महा उदार सुनियत है कृपा मोऐ कीजै ॥१॥
तुम बिन और नाहीं कछु समुझौ मोहि अपनौ करि लीजै ।
निःसाधन रंक तिहारै निज चरणाश्रय दीजै ॥२॥
तिहारे निज संग बिना मेरै नहिं उस अंतर झीजै ।
कहत 'गोविंद' चरणामृत तजिकै कहा समर्पित जल पीजै ॥३॥

(८२) राग : देस

सर्वज्ञातलीला सो पठतर कोऊ न आवै ।
तीन लोक में सुर नर मुनि कोऊ पार न पावै ॥१॥
अद्भुत सुजस विमल कौ सेस सहस्र मुख गावै ।
तात मात भात भगिनी ग्रहिनी न सुहावै ॥२॥
यह महिमा स्त्रवननि सुनि अब कछु औ र न भावै ।
सब साधन तजि 'गोविंद' निसिदिन श्रीवल्लभ उस लावै ॥३॥

(८३) राग : बिलाबल

अतिमोहन की अटपटी रीति ।
तीनि भ्रुवन में स्त्रवननि सुनियत देखत लगत सबै विपरीति ॥१॥
साधन किएं होत नाहिन कछु मिटत नाहिं काल की नीति ।
श्रीवल्लभ करुना कटाच्छ तै होत है सदानंद पद प्रीति ॥२॥
यह विरेक जाने बिन सब कोउ करत है क्रिया सबै जु अनीति ।
महिमा जिन जान्यो सो 'गोविंद' सो जन गयो सबनि कौं जीति ॥३॥

(८४) राग : सारंग

सर्वासक्त सों मन मान्यो ।
ऐसौ और नहीं त्रिभ्रुवन मैं मन बचन क्रम करि जान्यो ॥१॥
अब कछु और सुहात नाहीं तज्यौ खान अरु पानी ।
मन अटक्यो फेर्यो न फिरत है सुदृढ़ प्रेम सों सानी ॥२॥
यह महिमा जाने बिन भूतल बड़ी होत है हानी ।
श्रीविठ्ठल करुना तै 'गोविंद' जन सरबस करि ठानी ॥३॥

(८७) यम : औंडी

अजो अवतारासदत सुखद वरण ।
कलिमत्वितारण अवसिधुतरणं निजजनउद्दरणं अशरणशरणं ॥१॥
कोटिकल्पं लावण्य व्रजपतिवदन निरसि निजजन हृदय फूले ।
अतुल महिमा स्रवन सुनत थकित भए सुर नर मुनि सिव समाधि भूले ॥२॥
पृथक करि पुष्टिपत्र प्रगट भूतल कियो बिना साधन सिगरौ जगत उद्दारौ ।
कहत 'गोविंद' जन अन्य आभय तजौ सुनियत श्रीवल्लभ उद्दर्यो जगत सारौ ॥३॥

(८८) यम : रामभी

तिहारै पतितपावन नाम ।

वजपति सुनहु मेरी विनती हौं सब पतितनि कौं धाम ॥१॥

सत्यप्रतिज्ञा स्रवन सुनत हौं बसत गोकुल नाम ।
बिना साधन जगत उद्दर्यो पूरे जन मन के काम ॥२॥

अद्भूत तिहारी महिमा सुनिहौं सुभिरौं आठों जाम ।
बहुमवाद 'गोविंद' स्थापना कियो खंडन कियो मत बाम ॥३॥

(८९) यम : विभास

स्वयशोगानसंहष्टदयां भोजविष्टर पदकमल गुगल परिमल कौ मोहि मधुकर कीजै ।
धर्मरहित कर्मरहित विद्या अरु ज्ञान हीन रंक दीन जानि जिय निज पदाश्रय कीजै ॥१॥
अबलौ जनम कोटि भटकि भटकि हार मानि समुझरौ नहि कछु विवेक अबहि महिमा जान्यौ ।
श्रीहरिविदनानल श्रीवल्लभ आनंदमय अवनितल प्रगट भए सुनि सुभग मूरति सो मन मान्यौ ॥२॥
तिहारी कृपा कटाक्ष तैं अति दुर्लभ सो पावत फल सदानंद सेवा सौं प्रेम सौं निबहै ।
कहत 'गोविंद' सब तजौ श्रीवल्लभवरन भजौ महिमा अति गृद है सो कलि मैं कोऊ ना लहै ॥३॥

(९०) यग : आसावरी

यशः पीयुषलहरीप्लावितान्यरस ।

तुम समान त्रिभुवन में नार्ही और सबै नीरस तुम पर सर्वस लै वार्है ॥१॥

जो उपाय कहे जु कृपा करि निजजन उद्धरन हेतु ।
निगम विरोध निवारन कौं प्रभु बांधी भवित दृढ़ सेतु ॥२॥

वह प्रताप स्रवन सुनिकै असुरनि उपज्यो त्रास ।
श्रीवल्लभ कौं विमल जस निसिदिन गावत 'गोविंददास' ॥३॥

परात्पर मम वल्लभ सद्गुप ।

करि करुना कलिजुग मैं प्रगटे निगम कल्पतरु रूप ॥१॥

नखसिख सुंदर आनंदमय वपु ढादस अंग अनूप ।
सुभग मूरति कौं नैननि निरखत कोहत अवनी रूप ॥२॥

यह स्वरूप महिमा बिनु जाने जगत परयो भवकूप ।
'गोविंद' विंता मिटी सबै जब निरख्यो सुखद स्वरूप ॥३॥

(९१) यग : श्रैरव

लीलामृतरसाद्वादीकृताखिलशरीरभृत् तिहारे दरस बिनु कैसे करिजीजिए ।
औंगुन सबै बिसारि कृपादृष्टि सौं निहारि अपनी प्रतिज्ञा पारि दरस मोहि दीजिये ॥१॥

धर्मकर्म हीन आवारक्रिया सबै भ्रष्ट ज्ञानभ्रष्ट जीव सबै बिन साधन उद्धरे ।
यह प्रताप स्रवन सुनिकै सुन नर मुनि थकित भए अपने जिय जानिकै पास आए सबहि पाइन परे ॥२॥

असुरन कौं उपज्यो त्रास निजजन मन भयो हुलास बाल बिरथ नरनारी सबनि के मन भाए ।
श्रीविठ्लपद परागधन सर्वस 'गोविंद' जन और सबै छांडि श्रीवल्लभ गुन गाए ॥३॥

(१) राग : गौड सारंग
 गोवद्दुनस्थित्युत्साह हमारौ जीवन प्रान अधार ।
 वृजाधीश वदन श्रीवल्लभ मन वचन कर्म निरधार ॥१॥
 करि करना कलिकाल धोर में निजजन कियौ उद्धार ।
 बिन साधन अपने प्रमेय करिकै धृत द्विजवर अवतार ॥२॥
 माया तिमिर निवारन को प्रगट अए स्त्रुति सार ।
 'गोविंद' सर्वस श्रीवल्लभ अग्नित गुन जु अपार ॥३॥

(२) राग : नटनारायण
 तल्लीलाप्रेममूरति श्रीवल्लभ मन भाए ।
 तजि बैकुंठ परमानंद निजजन उद्धरन हेतु करना करि कृपानिधान अवनीतिल आए ॥१॥
 सिव विरंवि सर्वीषति देव कोटि तैतीसौ सुर नर मुनि करि समाधि छार मानि पार कोउ न पाए ॥२॥
 सुक सनकादिक नारद व्यास जु करत बस्तान सेस वदन सहरत्र सदा सुजस गुन गाए ॥३॥
 सुखद सुबोधिनी सुनाइ स्वववनांमृत पान कराइ गोकुलपति दिए बताइ श्रीतक्ष्मनयूल ।
 श्रीविघ्न पदरज 'गोविंद' कौ सर्वस है श्रीवल्लभ की जयजय करि चढ़ि विमान बरसत प्रसून ॥४॥

(३) राग : गौरी
 यज्ञभ्रोक्ता दिनमणि उदयौ भूतल भयौ प्रकास ।
 जयजयकार भयौ विभुवन में स्त्रुतिपथ भयौ विकास ॥१॥
 देव कोटि तैतीसौ देखत चढ़ि विमान छायौ आकास ।
 दिवि दुंदुभी बजावन लाने सुर नर मुनि पूरी आस ॥२॥
 मायावादी मत मयंद मन जन्मयुरुष देखिउ उपज्यो त्रास ।
 यह महिमा कोऊ नहिं जानत गावत विमल जस 'गोविंद' ॥३॥

(४) राग : वसंत
 यज्ञकर्ता बहुत प्रगटे श्रीतक्ष्मण के गेह ।
 श्रीहरि प्रगट किए सुख मूरति सन्मनुष्याकृति धरि देह ॥१॥
 सो स्वरूप श्रीवल्लभ कौ कोउ जन पार न पावै ।
 प्राकृत रूप देखिउ श्रम उपजत असुरन मोह उपजावै ॥२॥
 यह महिमा है निगम अगोवर काहुके हृदै न पावै ।
 श्रीविट्ठल करना कटाछ बल 'गोविंद' जन जस गावै ॥३॥

(५) राग : वसंत
 चतुर्वर्गविशारद प्रभु स्वजन प्रतिपाल ।
 तिहारौ नाम उच्चार किए तैं मिटत कोटि जंजार ॥१॥
 श्रीभागवतप्रतिपदमणिवरभावाशुभूषिता मूर्ति ।
 तिहारे चरन सरोज रेज तैं होत स्त्रुतिपथ सफूर्ति ॥२॥
 तुमसे प्रभु सुने नहीं कबहुं देखे आगै नाहीं ।
 बहमसंबंध कराइ सौंपत है ग्रहि दृढ़ करि बांहि ॥३॥
 तिहारी सिगरी बातन मोतै कही नाहिन जात ।
 सेवा कथा करत अरु 'गोविंद' जन गुन गात ॥४॥

(६) राग : पंचम
 सत्यप्रतिज्ञा प्रतिज्ञा पारौ निःसाधन हौं रंक तिहारौ ।
 वृजपति वदनानल बिन कलि मैं नाहिन और कोउ रम्बवारौ ॥१॥
 गोद पसारि करत हौं विनती मन वचन क्रम करिकै निर्धारौ ।
 करौ करना करनानिधान मोकौं कलिभुजंग तैं भय उपजत भारौ ॥२॥
 अति आवर्त्त सहित दुस्तर भवसागर पदनौंका दै तारौ ।
 श्रीविट्ठल पदरज 'गोविंद' कहै तिहारे सरन बिन नाहिन निस्तारौ ॥३॥

(१४) यग : वजाभी

विगुणातीत जीवन धन प्रान ।
तीनि लोक में व्यापि रहयो जस सुर नर मुनि करै गान ॥१॥
दैवीजन कौ सर्वस श्रीमद्वल्लभ इस बिनु कोउ न आन ।
षट्मुन पूरज द्विजवर वपु धरि निजजन रास्तौ मान ॥२॥
शीढरि वदनानल आनंदमय देत अभयपद दान ।
कहत 'गोविंद' उपाधि सबै तजि सुखद सुजस करै पान ॥३॥

(१५) यग : कर्त्त्यान

नयविशारद कौ विमल जस भावै ।
अपनी बुद्धि अनुसार कहत सब कोङ पार न पावै ॥१॥
सिव विरचि मोहित सुर जर मुनि सब मिलि कहुं कहुं कछुक बतावै ।
श्रीहरिवदनानल महिमा गुन सेस सहस्र मुख गावै ॥२॥
श्रीवल्लभ भानु अवनीतल उदयो माया तिमिर निबिड सु नसावै ।
रंक 'गोविंद' श्रीवल्लभ पद बिन अनत न सीस नमावै ॥३॥

(१६) यग : सारंग

स्वकीर्तिवर्द्धन की कीर्ति जग में फैल रही ।
आनंद रूप करत ताही को जिनके हृदय आइ छही ॥१॥
हरि बस हौय सदा तिनिही के जो यह निसिदिन गावै ।
हरिलीतारस रोम रोम में तिनिही के में आवै ॥२॥
तिनिके दरसन अरु नाम मात्र तैं कोटि दुष्कृत भाजै ।
कहत 'गोविंद' ऐसेन की संगति तैं निर्झय होइ नित गाजै ॥३॥

(१००) यग : विभास

तत्वसूत्रभाष्यप्रवर्तक कौ अति अद्भूत सुजस विमल तीनि भुवन व्याप्यो ।
करि करुना कलिजुग में द्विजवर अवतार धरयो मायानमत खंडन करि ब्रह्मवाद स्थाप्यो ॥१॥
तिहारी कला अंस प्रगटे वामन बलिराज छल्यो चरन एक करि त्रिविक्रम तीन भवन भाप्यो ।
स्त्रवन सुनत सुरसुंदरी चढ़ि विमान छायो नभ देखि आकास अति उजास पंचम आलाप्यो ॥२॥
तिहारे चरन विमुख जीव नेंकु नाहीं धरत धीर असुरन तैं सब वृथा जन्म काप्यो ।
अजहुं कछु वैतत नहीं भटकत है निसिवासर संपति के हेत मन करत है विलाप्यो ॥३॥
काम क्रोध लोभ मोह मत्सर करि साधु संग छांडि असदालाप असुरमति जगत संताप्यो ।
सत्संगति करकै श्रीविट्ठल पदसरोज रज जगत मैं व्यापि रहयो 'गोविंद' जन सीस धरि छाप्यो ॥४॥

(१०१) यग : सामेरी

मायावादाख्यतूलाग्नि तुम कलि मैं भूतल दरस दीनौ ।
ऐसी आगै नहीं भई बहुरि यह विधि सबहि प्रगट अब कीनौ ॥१॥
जौ जौ बात सुनी नहिं कबहू सो तुम्हारी कृपाबल तै हम चीनौ ।
यह हारद काहू जान्यो जिन मान्यो सो रहत रसभीनौ ॥२॥
कलि से सुनत सब बतियां तातै भरि आवत मेरी छतियां ।
श्रीविट्ठल पदरज 'गोविंद' कों दीनौ प्रमेयबल यह सब भतियां ॥३॥

(१०२) यग : पूर्वी

ब्रह्मवादनिरूपक पदरज पावन कौ ध्यान धरत दिनरात ।
दरस परस हौ तिहारौ चाहत और कछु नहीं तुम बिन मोपै सुहात ॥१॥
मन मेरौ अटकयो इनि बातनि खानपान अब कियो न जात ।
लगन लागि रही श्रीवल्लभ सौं कहत न काहू सौं मो मन बहुत लजात ॥२॥

अपने मन तै मेरे मन की इच्छा तुम तै निबहात ।
'गोविंद' तिहारो सुजस विमल अति प्रफुलित मन गुन गावत न अघात ॥३॥

(१०३) राग : मलार

अप्राकृताखिलाकल्पभूषित मो पर कृपा करौ ।
कोटिक जनम भए भटकत भटकत कारज कछु न सरौ ॥१॥
अब कहीं जु महानिधि पाई बूडत बांह पकरौ ।
जबै सुधि होत श्रीवल्लभ की तब बिसरत दुःख सगरौ ॥२॥
बहमवाद हारद जाने बिनु करत असुर झगरौ ।
'गोविंद' प्रभु कलि में उद्धरत है मति साधन करि जु गरौ ॥३॥

(१०४) राग : विहागरौ

सहजस्मित श्रीवल्लभ वल्लभ मोक्षो अति ।
और कछु समुझत नाहिं सुभग मूरति सौ लागि रही रति ॥१॥
दैवी सृष्टि उद्धारन कारन वहुरौ प्रगटे अवनीतल व्रजपति ।
तिहारे चरनसरोरुह तजिकै नाहिं चाहत कबहुं और गति ॥२॥
मो मन लगन लागि रहै आधी निमिष नहीं होत है विस्मृति ।
विनती सुनहु कृपानिधि मेरी इनि नैननि निरखौ नित्यप्रति ॥३॥
ऐनिदिनां रसना कहि जीवित हौं कर जोरि करौं विनती ।
'गोविंद' जन कौं तन मन धन जीवन सर्वसु श्रीमद्वल्लभ महामति ॥४॥

(१०५) राग : धनाश्री

त्रिलोकीभूषण प्रान आधार ।
दैवी जीव उद्धारन कारन धृत द्विजवर अवतार ॥१॥
स्त्रुति स्मृति सास्त्र पुरान के कोऊ न पावत पार ।
श्रीहरि तदन वनिंह आनंदमय श्रीवल्लभ निरधार ॥२॥
श्रीभागवत सुधा समुद्र मथि कीनौ भवित प्रचार ।
करि सीखिवे सेवा निजजन कौं बताइ दिए स्त्रुतिसार ॥३॥
करुना करि कलि में करुनानिधि श्रीवल्लभ महा उदार ।
जो अवनीतल दरस न देते तौ वसुधा बूडत भार ॥४॥
साधन कोटि करौ जिन कोऊ होइ नहीं उद्धार ।
कहुत 'गोविंद' श्रीवल्लभ सुमिरे बिन होत नहीं निस्तार ॥५॥

(६) राग : केदारौ

भूमिभाव्य कलि मैं जु दरस दियौ लक्ष्मण अमृत उदधि द्विजराज ।
निविड तिमिर मायावादिनि कौं वचन कीरतन गयो भाज ॥१॥
जयजयकार भयो त्रिभूवन मैं सुर नर मुनि के जुरे समाज ।
अब मति करौ सोच कोउ मन मैं पुष्टिभवित ढूढ बांधि पाज ॥२॥
निःसाधन तिहारे सरन भयो रंक जानि अब राखौ लाज ।
सदा बिराजौ सीस 'गोविंद' के श्रीवल्लभ विदुषवृद्ध सिरताज ॥३॥

(७) राग : कान्छरौ

सहजसुंदर सुभग मूरति मेरे मन बसौ ।
अन्या आलाप तै वृथा आयुष होत अवगुन सब बिसारि मम दृग तै मति खसौ ॥१॥
सुखसेव्य स्त्रवन सुनि तिहारे आयो सरन अपने जिय जानिकै मम हृदय मैं घसो ।
द्विविद्य लज्जा छांडि कहुत 'गोविंद' जन देखि मोक्षो वल्लभपद विमुख सब हंसौ ॥३॥

(१०८) राग : गी ल सारंग अशोषभवतसम्प्राप्तिवरणाहजरजोधन।

जो है पुष्टिसृष्टि कौ सर्वस लाभि रही तासो मो मन ॥१॥

जो अति दुर्लभ सुर नर मुनिन कौ सब मांगत है इनदिन।

जी ली कृपा न होइ तिहारी तीली दहत सबै तन ॥२॥

जब जाग्यो श्रीवल्लभ माछेमा तब सब तज्यो श्रीवल्लभ बिन।

सो श्रीवल्लभ श्रीविद्ठल करुना तै पायो 'गोविंद' जन ॥३॥



विषेष :- "भवतेच्छापूरक" (पद संख्या ८१) नाम का एक पद और भी प्राप्त है, जो इस प्रकार है

(८१/२) राग : सारंग भवतेच्छापूरक नाम श्रीवल्लभ।

तीनि लोक मैं सुर नर मुनि कौ पदरज अति दुर्लभ ॥१॥

बिन साधन कलिकाल धोर मैं श्रीवल्लभ महा उदार।

निजपद नोका दै स्वकीयन कौ भवसिधु उतारे पार ॥२॥

सेस सारदा कहांलौ बरनै अग्नित गुज जु अपार।

प्रगटे व्रजपति वनिह 'गोविंद' दास के प्रान अधार ॥३॥

राग : बिलावल आनन्दनिधि के शतअष्टोत्तर नामोच्चार करौ धरि प्रेम।

भद्राविशुद्धि बुद्धि सौ पढ़ौ अनुदित तौ उपजै वनिह पदप्रेम ॥१॥

तदैकमन ठहै जपो गुप्त अति पावौ सिद्धि अरु मुवित।

बिन साधन जु महाफल पैयत निःसन्देह होइ आसवित ॥२॥

तदप्राप्तौ वृथा ही मोक्षफल तत्प्राप्तौ हि गतार्थता।

अनायास कर तै साधन त्यजत 'सर्वोत्तम' तै निर्भयता ॥३॥

श्रीमद्विनकुमार श्रीविद्ठल प्रगट किए दैवीजन काज।

कृष्णरसार्थी जपौ कहै 'गोविन्द' हृदै बसे श्रीवल्लभ महाराज ॥४॥



राग : काफी श्रीसर्वोत्तम जप नित्य करना हो।

सकल शास्त्र कौ सार यही है, त्रिविद्य ताप सब अध हरना हो ॥१॥

पुष्टि पदारथ याही तै पैयत, याही तै भवसागर तरना हो।

रंगीले 'त्रीकम' जाऊं बलिहारी, कालदंड से ना डरना हो ॥२॥



करिये श्रीसर्वोत्तम रसपान।

प्रशंसा करि सकै कौ न कवि ऐसौ, श्रीमुख करत बखान ॥१॥

अतिसय करुना करि या कलि मैं, दियो दैवी जीवन को दान।

एक एक अक्षर है अधरामृत, गुप्त रहस्य गुनगान ॥२॥

अद्द निमेष विलम्ब नहिं करिये, इनदिवस आठौ जाम।

'रसिक प्रीतम' जाके रंग रंग्यो, सोहै भवत निदान ॥३॥